शारिकासहस्रनामावली

शारिकासहस्त्रनामावली

प्रकाशक :-

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 15 रु०

लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्कस
लाल कुआं, देहली-6

पुष्पार्चन

इष्टदेव को सन्तुष्ट करने, मानसिक शान्ति, तथा हर मनोकामना सिद्धि के लिए पुष्पार्चन एक सरल तथा सुगम मार्ग है, हम जब भी चाहें– हर एक व्रत महोत्सव, पर्व अथवा जन्म दिन आदि पर जब हम कोई महान् यज्ञ करने में असमर्थ हूँ तो अवश्य पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें।

विष्णु भगवान् ने शंकर भगवान् को सन्तुष्ट कराने के लिए **"सहस्त्रपुष्पार्चन्"** किया परन्तु अन्त में हजार पुष्प में एक कम होने पर भक्ति के आवेश में अपना नेत्रकमल हजारवें पुष्प के रूप में अर्पण किया, जिस के फलस्वरूप विष्णु को भगवान् शंकर से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ।

पुष्पदन्ताचार्य ने फूल न मिलने पर फूलों के स्थान पर अपने 32 दांत पुष्पार्चन के रूप में अर्पण करते हुये महिम्नस्तोत्र के 32 श्लोकों का उच्चारण किया, भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं"** इन प्रमाणों से स्पष्ट है पुष्पार्चन का पूजा विधान भारतीय पूजा क्रम में प्राचीन काल से प्रचलित है।

सस्त्रपुष्पार्चन विधिः–

इस पूजा में इष्ट देवता के सहस्त्रनाम के साथ आरम्भ में **"ॐ"** और अन्त में **"नमः"** जोड़कर एक-एक नाम से इष्टदेव पर पुष्प चढ़ाया जाता है, इस पूजा के लिये पुष्प पर्याप्तमात्रा में होने चाहिये (पुष्प की पत्तियाँ अलग अलग करके पूजा में प्रयोग न करें, फूल ख़ण्डित ना हो) पुष्पार्चन के लिये किसी कमरे में स्वच्छ आसन बिछायें, जहाँ सभी भक्तजन सामूहिक रूप से पूजा में सम्मिलित हो सकें, जो पूजा का मुख्यकर्त्ता अथवा यजमान होगा उसको चाहिये पद्मासन में बैठकर अपने सामने इष्टदेव की मूर्ति उस ढंग से रखे ताकि आप को फूल अर्पण करने में कोई रुकावट न पड़े पूजा के आरम्भ पर रत्नदीप तथा धूप आदि जलाकर इष्टदेव की मूर्ति को तिलक लगाकर फूलों की मालाओं से सजाइये, पहले आप (यजमान) धूपदीप करे जो इसी पुस्तक में अलग दर्ज है, पूजा में सम्मिलित होने वालों में से जो सहस्त्रनामावली का उच्चारण कर सके एक एक नाम के

आरम्भ में "ॐ" और अन्त में "नमः" जोड़कर इष्टदेवता पर फूल चढ़ायें

ॐ महाविद्यायैः नमः, ॐ जगत् मात्रेः नमः "ॐ नारायणाय नमः" शिवाय नमः" जो भक्तजन पूजा में सम्मिलित होंगे वे भी हरनाम के साथ "न का सामूहिक रूप से उच्चारण किया करें। यज्ञ में स्वाहा, पुष्पार्चन में न का प्रयोग होता है।

हर 100 वीं पुष्पांजलि अर्पण करने के समय इष्टदेव का वैदिक मन्त्र अव पढें जो इसी पुस्तक में दर्ज है।

हजारवीं पुष्पाँजलि डालते समय सभी भक्त खड़े होकर वैदिकमन्त्र और इष्ट का कोई श्लोक पढ़कर अन्तिम पुष्पांजलि श्रद्धा से अर्पण करके तर्पण करें–जै कि पूजाविधि में दर्ज है आरती आदि करके प्रप्युन करके प्रसाद बाटें।

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढें

ॐ अस्य श्री-आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुत छन्दः, कूर्मो देवता-आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढें :–**पृथ्विी त्वया धृता लोका दे त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्**

आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढें :

ध्रुवा द्यौर्-ध्रुवा-पृथ्वी, ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इ जगत् ध्रुवो राजा विशाम्-असि। तिलक-फूल-अर्घ्य चढाते हुये पढें :

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पु नमः। नमस्कार करते हुए पढें :– **शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिव चतुर्भुजम्। प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व-विघ्नोप-शान्तये अभि-प्रीतार्थ-सिद्धचर्थं पूजितो यः सैरैर्-अपि। सर्व विघ्नच्छि तस्मै गणाधि-पतये नमः।**

गुरुः-ब्रह्मा, गुरुः-विष्णुः गुरुः-साक्षात्-महेश्वरः। गुरुर्-ए जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरु-वे नमः।। ॐ गुरवे नमः, परम गुर

नमः, पर-मेष्ठिने गुरवे नमः, परमा-चार्याय नमः आदि सिद्धिभ्यो नमः

अंग न्यास-कीजिये अंगन्यास करके चारों दिशाओं की ओर तिल फँकते हुये पढें:-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता, ये भूता विघ्नकर्तार:-ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके मुँह और पैरों को छिडकते हुये पढें :-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अर-रुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र-धारण करते हुये पढें :-

वसोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्र-धारम्-अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। जंग चावल आदि लाकर तिलक करना

अपने आपको तिलक अक्षत धूप चढ़ाते हुये पढें :-

परमात्मने पुरु-षोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः-अर्घो नमः पुष्पं नमः।

चोंग (धीप) को तिलक अक्षत फूल चढाते हुये पढें :-

"स्वप्रकाशो-महादीपः सर्वत-स्तिमिरा-पहः। प्रसीद नम गोविन्द दीपोयं प्रतिकल्पितः। भो दीप देव-रूवपस्त्वं कर्म-समाप्तिः यावत् स्यात्-तावत् त्वं स्थिरो भव।

सूर्यदिवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढें :-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रतापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः-तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार-शक्त्यै दीप-धूप-संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत्-तिथौ-अद्य .... मासस्य ..... पक्षस्य तिथौ ..... वासरे दीपोनमः धूपोनमः।

श्री शारिका सहस्त्रनाम

स्वाहाकार पूजा विधि

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें–श्री भैरवी। या सा देवी पुरा ख्याता शारिका-रूप-धारिणी, जालन्धर-राक्षसघ्नी प्रद्युम्न् शिखरे स्थिता। तस्या नाम सहस्त्रं में मन्त्रगर्भ जयावहम्। कथयस्व महादेव यद्यस्ति मयि ते दया।

श्री भैरव:–या देव देवी भद्राख्या त्रिकोटि-देवसंयुता। महा सुरविनाशाय शारिका-रूपधारिणी। कूटं सुमेरोः चच्‌ज्वग्रे समादाया-गताम्बिका। त्रयस्त्रिंशति-कोटचश्च देवानां वैसमा[गताः। तस्या नाम सहस्त्रं ते मन्त्रगर्भ जयावहम्। कथयामि परां विद्यां सहस्त्राख्याभिधां शिवे। शिलायाः शारिकाख्याया परां सर्वस्वरुपणीम्। विना नित्य-क्रियां देवि होमार्चादि बिना परम्। विनाश्मशानगमनं बिना समयपूजनम्। ययालभेत् फलं सर्व तां विद्यां श्रृणु पार्वति। या देवी चेतना लोके शिलारुपास्ति शारिका सृजत्यवति सा विश्वं संहरिष्याति तामसी। रजोगुणेन सृजति सत्वेनावति संसृतिम्। तमसा संहरेत् सैव त्रिब्रह्मरुपधारिणी। सैव संसारिणां देवी परमैश्वर्य दायिनी, परंपद प्रदास्यन्ती महाविद्यात्मिका शिला। तस्यां नामसहस्त्रं ते वर्णयामि सहस्त्रकम्। रहस्यं मम सर्वस्व सकलाचार वल्लभम्, यो जपेत् परमां विद्यां पठेत् नाम सहस्त्रकम्। धारयेत् कवचं दिव्यं, पठेत् स्तोत्रेश्वरं परम्-किंतस्य दुर्लभ लोके नाप्नुयात्-यत्-यत्-ईश्वरि।

अंगन्यास कीजिये :–

अस्य श्रीशारिका भगवती-नामसहस्त्रस्य महादेव ऋषिः। त्रिष्टुप्-छन्दः श्री शारिका भगवती देवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः फ्रां कीलकं आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारर्णाथें श्रीशारिका प्रसाद सिद्धयाथे

पुष्पार्चने (होमे) विनियोगः। "ॐ ह्रां श्रां" से प्राणायाम कीजिये-ध्यानं-बालार्क-कोटि-द्युति-इन्दु-चूडां वरासिचक्रा-भय-बाहुम्-आद्याम्।। सिंहाधिरुढां शिववामदेह लीनां भजे चेतसि शारिके शीम् अग्नि में तीन आहुतियां ढाले-शारिकायै विद्महे-स्वाहा, सप्तक्षर्यैधीमहि स्वाहा होम के लिये - तन्न शारी प्रचोदयात् स्वाहा।। शारिकायै विद्महे, सप्ताक्षर्यै धीमहि स्वाहा तन्न शारी प्रचोदयात् स्वाहा।। शारिकायै विद्महे सप्ताक्षर्यै धीमहि तन्नः शारी प्रचोदयात् स्वाहा।। मूलमंत्र ॐ ह्रीं श्रीं हूँ क्रां आं शां शारिकायै नमः, स्वाहा सहस्त्रनाम का होम करना हो स्वाहा पढिये, पुष्पार्चन करना हो तो स्वाहा के स्थान पर नमः पढ़िये, हर एक सौ नाम उच्चारण करने से पहले पञ्चस्तवी का एक एक श्लोक पढिये और फूल अर्पण करते रहें-यदि ऐसा न हो सके तो 'सर्वमंगल-मंगल्ये' इस मन्त्र का सामूहिक उच्चारण कीजिये-999 आहुति देकर अथवा-पुष्पार्चन में फूल अर्पण करके-सभी खड़े हो कर अन्तिम नाम इस स्वाहाकार का 'आशां ह्रां हूँ स्वरुपिण्यै स्वाहा, पुष्पार्चन में नमः उच्चारण करके फूल डालिये -ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शारिका पढ़ते हुये प्रणाम कीजिये। स्वाहाकार हो अथवा पुष्पार्चन-फूल चढ़ाते हुये पढ़ें-पुण्यं पुण्यजनस्तुत्यं वैष्णव-संमितम्। इंदयः पठते देवि श्रावयेत् वा श्रृणोति च। स एव भगवान् देवः सत्यं सत्यं महेश्वरि। एक कालं द्विाकलं वा त्रिकालं पठते नरः सद्या तस्य महेशानी शारिका वरदा भवेत्। यः पठेत् देवि लोलायां चितायां शवसन्निधौ। पाठमात्रं त्रिवारं तु तस्य पुण्यफलं श्रृणु, ब्रह्महत्यां गुरोहत्यां सुरापानं तु गोवधम्। महापातक-संघातं पातकं चोप पातकम्-स्तेयं च हेमहारित्वोत्-भवं पापं हि नाशयेत्-स एव हि रमापुचो यशस्वी लोकपूजितः। किं किं न लभते देवि साधको धीरसाधकः पुत्रवान् धनवान्-लोके, सत्याचार्परः शिवः। शक्तिं सम्पूज्य देविशि पठेत स्तोत्र वरं शुभम्। इहलोके सुखी भूत्वा परत्रच दिवं व्रजेत्। इतिनाम सहस्त्रं तु शारिकाया मनोरमम्-अत्यन्तदुर्लभं गोप्यं न देयं यस्य कस्य चित्।

तर्पण कीजिये -

अनेन शारिका सहस्त्रेण ॐ ह्रीं श्रीं हूँ फ्रां आं शां शारिका भगवती प्रीयतां प्रीतास्तु।

अथ इन्द्राक्षी-स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्र-मन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिः; अनुष्टुप् छन्दः, श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, भुवनेश्वरी शक्तिः, माहेश्वरी कीलकं, गायत्री, सावित्री सरस्वती कवचं आत्मनो-वाङ्मनः-कायो-पार्जित-पा-निवारणार्थं सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः। (करन्यासः) लक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः, भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नमः, माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः, वज्रहस्तायै अनामि-काभ्यां नमः, सहस्त्र-नयनायै कनिष्ठिका-भ्यां नमः, इन्द्राक्षी-भगवत्यै करतल-कर-पृष्ठाभ्यां-नमः। अथ षडंगन्यासः –लक्ष्म्यै हृदयाय नमः, भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा, माहेश्वर्यै शिखायै वषट्, वज्रहस्तायै कवचाय हुं, सहस्त्र-नयनायै नेत्राभ्यां वौषट्, इन्द्राक्षी-भगवत्यै-अस्त्राय फट्।। प्राणायामः।।

ध्यानम्ः–ॐ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्र-धरां शुभाम्। वामे वज्र-धरां सव्य-हस्तेऽभय प्रदाम्। सहस्त्र-नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्। प्रसन्नवदनां नित्याम्-अप्सरो-गण-सेविताम्। श्री दुर्गां सौम्य वदनां पाशां-कुशधरां पराम्। त्रैलोक्य मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।

इन्द्र उवाच–इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता। गौरी, शांकभरी देवी दुर्गा-नाम्नेति-विश्रुता (1) कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घंटा-महा तपा। गायत्री सा च सावित्री ब्रह्मा-णी ब्रह्म-वादिनी (2) नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला। अग्नि-ज्वाला रौद्र-मुखी कालरात्रिस्तपस्विनी (3) मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णु-माया जलोदरी। मदोदरी मुक्त-केशी घोर-रूपा महाबला (4) आनंदा भद्रजानंदा,रोग-हन्त्री शिव-प्रिया। शिव-दूती कराली च प्रत्यक्षा

परमेश्वरी (5) इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र शक्ति परायणा। महिषा-सुर-संहर्त्री चामुंडा गर्भदेवता (6) वाराही नारसिंही च भीमा भैरव-नादिनी श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सर-स्वती (7) आनंदा विजया पूर्णा मनस्तोषा-पराजिता। भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा (8) शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी।।

एतै-नामपदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता। आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्या-ऽक्षय-सम्पत्ति कारकम्। क्षमा-पस्मार-कृष्ठादि-ताप-ज्वर निवारकम्। शतम्-आवर्त्येत-यस्तु मुच्यते व्याधि-बन्धनात्। आवर्तयेत् सहस्रेण लभते वांछितं फलम्। राजा वशम्-आवप्नोति सत्यम्-एवन-संशयः। लक्षम्-एकं जपते्-यस्तु साक्षात् देवी स पश्यति। त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्यं च सम्पदः अर्धरत्रे पठेत्-नित्यं मुच्यते व्याधि-बन्धनात्-ऐन्द्र स्तोत्रम्-इदं पुण्यं जपेतु फलवर्धनम्। विनाशाय रोगाणाम्-अप-मृत्यु-हराय च। राज्यार्थी लभते राज्यं धनाथी विपुलं धनम् इच्छाकामं-तुकामार्थी धर्मार्थी धर्मम्-अव्ययम्। विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम्। इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः। माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी। शक्तिः शंकर-वल्लभा त्रिनयना वाक्-वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरयी माता कुमारी-त्यसि।।

अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित-पाप-निवारणार्थ श्री इष्ट-देव-प्रीत्य-र्थं भगवती अमा कामा चार्वगी टंक-धारणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिका-भगवती श्री शादरा-भगवती श्री महाराज्ञा भगवती श्रीज्वाला भगवती व्रीडाभगवती वैखरी-भगवती वितस्ता भगवती गंगा-भगवती यमुनाभगवती-कालिका-भगवती सिद्ध-लक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुर-सुन्दरी सहस्रनाम्नी देवी भवानी सपरि-वारा सवाहना सायुधा सांगा प्रीयतां प्रीतास्तु। इति इन्द्राक्षी स्तोत्रं सम्पूर्णम्।
असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ ह्रींश्रींहूंफ्रां-

आंशांश्रीशारिकायै स्वाहा

ॐ श्यामसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ शिलायै स्वाहा

ॐ शार्यै स्वाहा

ॐ शुक्यै स्वाहा

ॐ शान्तायै स्वाहा

ॐ शान्तमानसगोचरायै स्वाहा

ॐ शान्तिस्थायै स्वाहा

ॐ शान्तिदायै स्वाहा

ॐ शान्त्यै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ श्यामपयोधरायै स्वाहा

ॐ देव्यै स्वाहा

ॐ शशाङ्कबिम्बाढ्यायै स्वाहा

ॐ शशांककृतशेखरायै स्वाहा

ॐ शशांकशो-

भिलावण्यायै स्वाहा

ॐ शशांकमध्यवासिन्यै स्वाहा

ॐ शार्दूलवाहायै स्वाहा

ॐ देवेश्यै स्वाहा

ॐ शार्दूलचर्मवासस्यै स्वाहा

ॐ गौर्यै स्वाहा

ॐ पद्मावत्यै स्वाहा

ॐ पीनायै स्वाहा

ॐ पीनवक्षोज-

कुड्मलायै स्वाहा

ॐ पीताम्बरायै स्वाहा

ॐ रक्तदन्तायै स्वाहा

ॐ दाडिमीकुसुम-
प्रभायै स्वाहा

ॐ स्फुरद्रत्नांशु-
खचितायै स्वाहा

ॐ रत्नमण्डल-
विग्रहायै स्वाहा

ॐ रक्ताम्बरधरायै स्वाहा

ॐ क्षीवायै स्वाहा

ॐ रत्नमाला-
विभूषणायै स्वाहा

ॐ रत्नसंमूर्छिताभायै स्वाहा

ॐ आद्यायै स्वाहा

ॐ दीप्तायै स्वाहा

ॐ दीप्तशिखायै स्वाहा

ॐ दयायै स्वाहा

ॐ दयावत्यै स्वाहा

ॐ कल्पलतायै स्वाहा

ॐ कल्पान्तदहनो-
पमायै स्वाहा

ॐ भैरव्यै स्वाहा

ॐ भीमनादायै स्वाहा

ॐ भयानकमुख्यै स्वाहा

ॐ भगायै स्वाहा

ॐ कारायै स्वाहा

ॐ कारुण्यरूपायै स्वाहा

ॐ भगमाला-
विभूषणायै स्वाहा

ॐ भगेश्वर्यै स्वाहा

ॐ भगस्थायै स्वाहा

ॐ कुरुकुल्यायै स्वाहा

ॐ कृशोदर्यै स्वाहा

ॐ कादम्बर्यै स्वाहा

ॐ कचोत्कृष्टायै स्वाहा

ॐ परमायै स्वाहा

ॐ परमेश्वर्यै स्वाहा

ॐ सत्यै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ सत्यायै स्वाहा

ॐ असत्यायै स्वाहा

ॐ सत्यस्वरूपिण्यै स्वाहा

ॐ परम्परायै स्वाहा

ॐ पटाकारायै स्वाहा

ॐ पाटलायै स्वाहा

ॐ पाटलप्रभायै स्वाहा

ॐ पद्मिन्यै स्वाहा

ॐ पद्मवदनायै स्वाहा

ॐ पद्मायै स्वाहा

ॐ पद्मकरायै स्वाहा

ॐ शिवायै स्वाहा

ॐ शिवाश्रयायै स्वाहा

ॐ शरच्छान्तायै स्वाहा

ॐ शच्यै स्वाहा

ॐ रम्भायै स्वाहा

ॐ विभावर्यै स्वाहा

ॐ द्युमणये स्वाहा

ॐ प्रस्तरायै स्वाहा

ॐ पाठायै स्वाहा

ॐ पीठेश्यै स्वाहा

ॐ पीवराकृतये स्वाहा

ॐ अचिन्त्यायै स्वाहा

ॐ मुसलाधारायै स्वाहा

ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा

ॐ मधुरस्वनायै स्वाहा

ॐ वीणायै स्वाहा

ॐ गीतप्रियायै स्वाहा

ॐ गाथायै स्वाहा

ॐ गारुड्यै स्वाहा

ॐ गरुडध्वजायै स्वाहा

ॐ अतीवसुन्दरा-

कारायै स्वाहा

ॐ सुन्दर्यै स्वाहा

ॐ सुन्दरालकायै स्वाहा

ॐ अलकायै स्वाहा

ॐ नाकमध्यस्थायै स्वाहा

ॐ नाकिन्यै स्वाहा

ॐ नाकपूजितायै स्वाहा

ॐ पातालेश्वर-

संपूज्यायै स्वाहा

ॐ पातालतल-

चारिण्यै स्वाहा

ॐ अनन्तायै स्वाहा

ॐ अनन्तरूपायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ स्वज्ञातायै स्वाहा१००

ॐ ज्ञानवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ अमेयायै स्वाहा

ॐ अप्रमेयायै स्वाहा

ॐ अनन्तादित्य-
रूपिण्यै स्वाहा

ॐ द्वादशादित्य-
संपूज्यायै स्वाहा

ॐ शम्यै स्वाहा

ॐ शामाकबीजिन्यै स्वाहा

ॐ विभासायै स्वाहा

ॐ भास्वरायै स्वाहा

ॐ अवर्णायै स्वाहा

ॐ समस्ता-

सुरघातिन्यै स्वाहा

ॐ सुधामय्यै स्वाहा

ॐ सुधामूर्तये स्वाहा

ॐ सुधायै स्वाहा

ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै स्वाहा

ॐ सुखदायै स्वाहा

ॐ सुरेशान्यै स्वाहा

ॐ कृशानुवल्लभायै स्वाहा

ॐ हविषे स्वाहा

ॐ स्वाहायै स्वाहा

ॐ स्वाहेशनेत्रायै स्वाहा

ॐ वह्निवक्त्रायै स्वाहा

ॐ अग्नितर्पितायै स्वाहा

ॐ सूर्याग्निसोमनेत्रायै स्वाहा

ॐ भूर्भुवःस्वः-

स्वरूपिण्यै स्वाहा

ॐ भूम्यै स्वाहा

ॐ भूदेवसंपूज्यायै स्वाहा

ॐ स्वयंभुवे स्वाहा

ॐ स्वा-त्मपूजकायै स्वाहा

ॐ स्वयम्भू-

पुष्पमालाढ्यायै स्वाहा

ॐ स्वयम्भूपुष्पवल्लभायै स्वाहा

ॐ आनन्दकन्दल्यै स्वाहा

ॐ कन्दायै स्वाहा

ॐ स्कन्दमात्रे स्वाहा

ॐ शिवालयायै स्वाहा

ॐ शिलारूपायै स्वाहा

ॐ शिलेशान्यै स्वाहा

ॐ शिलापूजन-
हर्षितायै स्वाहा

ॐ चेतनायै स्वाहा

ॐ विमर्शरूपायै स्वाहा

ॐ चिद्रवाकारायै स्वाहा

ॐ भवपत्न्यै स्वाहा

ॐ भयापहायै स्वाहा

ॐ विघ्नेश्वर्यै स्वाहा

ॐ गणेशान्यै स्वाहा

ॐ गणमात्रे स्वाहा
ॐ गणप्रस्वै स्वाहा
ॐ गणेशमुख्य-
सम्पूज्यायै स्वाहा
ॐ विघ्नविध्वंसिन्यै स्वाहा
ॐ निशायै स्वाहा
ॐ वश्यायै स्वाहा
ॐ वश्यजनस्तुत्यायै स्वाहा
ॐ स्तुतये स्वाहा
ॐ श्रुतिधरायै स्वाहा
ॐ श्रुतये स्वाहा
ॐ श्रुतिशास्त्र-
विधानज्ञायै स्वाहा
ॐ शास्त्रार्थकोविदायै स्वाह

ॐ रमायै स्वाहा

ॐ वेद्यायै स्वाहा

ॐ विद्यामय्यै स्वाहा

ॐ विद्यायै स्वाहा

ॐ विधातृवरदायै स्वाहा

ॐ वध्वै स्वाहा

ॐ वधूरूपायै स्वाहा

ॐ वधूपूज्यायै स्वाहा

ॐ वधूपान प्रतर्पितायै स्वाहा

ॐ वधूपूजन सन्तुष्टायै स्वाहा

ॐ वधूमालाविभूषणायै स्वाहा

ॐ वामायै स्वाहा

ॐ वामेश्वर्यै स्वाहा

ॐ वाम्यायै स्वाहा

ॐ वामाचारप्रियङ्कर्यै स्वाहा
ॐ वामाचारायै स्वाहा
ॐ वामदेवपूज्यायै स्वाहा
ॐ वामस्थितायै स्वाहा
ॐ अर्थदायै स्वाहा
ॐ वामदेवेश्वरीदेव्यै स्वाहा
ॐ कुलाकुलविचारिण्यै स्वाहा
ॐ वितर्कतर्क-
निलयायै स्वाहा
ॐ प्रलयानलसन्निभायै स्वाहा
ॐ यज्ञेश्वर्यै स्वाहा
ॐ यज्ञमुखायै स्वाहा
ॐ यज्ञाङ्ग्यै स्वाहा
ॐ यज्ञवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ याजकायै स्वाहा

ॐ अयाजकायै स्वाहा

ॐ आराध्यायै स्वाहा

ॐ यजनायै स्वाहा

ॐ यानपात्रकायै स्वाहा

ॐ यक्षेश्वर्यै स्वाहा

ॐ यक्षदात्र्यै स्वाहा

ॐ यक्षनायकपूजितायै स्वाहा

ॐ पर्वतस्थायै स्वाहा

ॐ पर्वतजायै स्वाहा

ॐ पार्वत्यै स्वाहा

ॐ पर्वताश्रयायै स्वाहा

ॐ पिलम्पिलायै स्वाहा

ॐ पदस्थानायै स्वाहा

ॐ पददायै स्वाहा

ॐ नरक़ान्तकायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ नार्यै स्वाहा२००

ॐ नर्मप्रियायै स्वाहा

ॐ श्रीदायै स्वाहा

ॐ श्रीदश्रीदायै स्वाहा

ॐ शतायुधायै स्वाहा

ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा

ॐ रत्यै स्वाहा

ॐ हूत्यै स्वाहा

ॐ आहुत्यै स्वाहा

ॐ हव्यवाहनायै स्वाहा

ॐ हरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ हरवध्वै स्वाहा

ॐ हाटकाङ्गद-
मण्डितायै स्वाहा

ॐ पुरुष्यायै स्वाहा

ॐ स्वर्गतये स्वाहा

ॐ वैद्यायै स्वाहा

ॐ सुमुख्यायै स्वाहा

ॐ महौषधये स्वाहा

ॐ सर्वरोगहरायै स्वाहा

ॐ माध्व्यै स्वाहा

ॐ मधुपानपरायणायै स्वाहा

ॐ मधुस्थितायै स्वाहा

ॐ मधुमय्यै स्वाहा
ॐ मददानविशारदायै स्वाहा
ॐ मधुतृप्तायै स्वाहा
ॐ मधुरूपायै स्वाहा
ॐ मधूककुसुम-
प्रभायै स्वाहा
ॐ माधव्यै स्वाहा
ॐ माधवीवल्ल्यै स्वाहा
ॐ मधुमत्तायै स्वाहा
ॐ मदालसायै स्वाहा
ॐ मारप्रियायै स्वाहा
ॐ मारपूज्यायै स्वाहा
ॐ मारदेवप्रियङ्कर्यै स्वाहा
ॐ मारेश्यै स्वाहा

ॐ मृत्युहरायै स्वाहा

ॐ हरकान्तायै स्वाहा

ॐ मनोन्मनायै स्वाहा

ॐ महावैद्यप्रियायै स्वाहा

ॐ वैद्यायै स्वाहा

ॐ वैद्याचारायै स्वाहा

ॐ सुरार्चितायै स्वाहा

ॐ सुरेश्यै स्वाहा

ॐ सुरसंपूज्यायै स्वाहा

ॐ सुरमान्यायै स्वाहा

ॐ सुरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ सुरापानरतायै स्वाहा

ॐ साध्व्यै स्वाहा

ॐ पात्रसिद्धिप्रदायिन्यै स्वाहा

ॐ सामन्तायै स्वाहा

ॐ पीनवपुष्यै स्वाहा

ॐ गुटच्यै स्वाहा

ॐ गुर्व्यै स्वाहा

ॐ गरीयस्यै स्वाहा

ॐ कालान्तकायै स्वाहा

ॐ कालमुख्यै स्वाहा

ॐ कठोरायै स्वाहा

ॐ करुणामय्यै स्वाहा

ॐ नीलायै स्वाहा

ॐ नाडच्यै स्वाहा

ॐ वागीश्यै स्वाहा

ॐ दूर्वाख्यातायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ अपार,पारगायै स्वाहा

ॐ गम्यायै स्वाहा

ॐ गतये स्वाहा

ॐ प्रीत्यै स्वाहा

ॐ पयोधरायै स्वाहा

ॐ पयोदसदृश-
च्छायायै स्वाहा

ॐ पारदायै स्वाहा

ॐ आकृत्यै स्वाहा

ॐ आलसायै स्वाहा

ॐ सरोज,निलयायै स्वाहा

ॐ नीत्यै स्वाहा

ॐ कीर्त्यै स्वाहा

ॐ कीर्तिकर्यै स्वाहा

ॐ कथायै स्वाहा

ॐ काश्यै स्वाहा

ॐ काम्यायै स्वाहा

ॐ कपर्दायै स्वाहा

ॐ आशायै स्वाहा

ॐ काश,पुष्पो,पमायै स्वाहा

ॐ रमायै स्वाहा

ॐ रामायै स्वाहा

ॐ राम,प्रियायै स्वाहा

ॐ रामभद्रायै स्वाहा

ॐ देव,समर्चितायै स्वाहा

ॐ राम,सम्पूजितायै स्वाहा

ॐ राम,सिद्धिदायै स्वाहा

ॐ राम,कार्यदायै स्वाहा

ॐ रामभद्रार्चितायै स्वाहा

ॐ रेवायै स्वाहा

ॐ देवक्यै स्वाहा

ॐ देववत्सलायै स्वाहा

ॐ देवपूज्यायै स्वाहा

ॐ देववन्द्यायै स्वाहा

ॐ देवदानवचर्चितायै स्वाहा

ॐ द्रुतये स्वाहा

ॐ द्रुतगतये स्वाहा

ॐ दम्भायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ दमन्यै स्वाहा ३००

ॐ विजयायै स्वाहा

ॐ जयायै स्वाहा

ॐ अशेषसुर-

सम्पूज्यायै स्वाहा

ॐ निःशेषासुरसूदिन्यै स्वाहा

ॐ वटिन्यै स्वाहा

ॐ वटमूलस्थायै स्वाहा

ॐ लास्यहास्यैक-

वल्लभायै स्वाहा

ॐ अरूपायै स्वाहा

ॐ निर्गुणायै स्वाहा

ॐ सत्यायै स्वाहा

ॐ सदासन्तोष-

वर्धिन्यै स्वाहा

ॐ सौम्यायै स्वाहा

ॐ यजुर्वहायै स्वाहा

ॐ याम्यायै स्वाहा

ॐ यमुनायै स्वाहा

ॐ यामिन्यै स्वाहा

ॐ यम्यै स्वाहा

ॐ क्षमायै स्वाहा

ॐ दक्षायै स्वाहा

ॐ वराम्भोधये स्वाहा

ॐ दाल्भ्य,सेव्यायै स्वाहा

ॐ दर्यै स्वाहा

ॐ पुर्यै स्वाहा

ॐ पौरन्दर्यै स्वाहा

ॐ पुलोमेश्यै स्वाहा

ॐ पौलोम्यै स्वाहा

ॐ पुलकाङ्कुरायै स्वाहा

ॐ पुरस्थायै स्वाहा

ॐ वनभुवे स्वाहा

ॐ वन्यायै स्वाहा

ॐ वानर्यै स्वाहा

ॐ वन,चारिण्यै स्वाहा

ॐ समस्तवर्ण-
निलयायै स्वाहा

ॐ समस्तवर्ण-
पूजितायै स्वाहा

ॐ समस्तवर्ण-
वर्णाढ्यायै स्वाहा

ॐ समस्तगुरु-
वत्सलायै स्वाहा

ॐ समस्तमुण्ड-
मालाढ्यायै स्वाहा

ॐ मालिन्यै स्वाहा

ॐ मधुपस्वनायै स्वाहा

ॐ कोशप्रदायै स्वाहा

ॐ कोशवासायै स्वाहा

ॐ चमत्कृत्यै स्वाहा

ॐ अलम्बुसायै स्वाहा

ॐ हास्यदायै स्वाहा

ॐ सदसद्रूपायै स्वाहा

ॐ सर्ववर्णमय्यै स्वाहा

ॐ स्मृत्यै स्वाहा

ॐ सर्वाक्षरमयीविद्यायै स्वाहा

ॐ मूलविद्यायै स्वाहा

ॐ विश्वेश्वर्यै स्वाहा

ॐ अकारायै स्वाहा

ॐ षोडशाकारायै स्वाहा

ॐ काराबन्ध-
विमोचिन्यै स्वाहा

ॐ ककारव्यञ्जना-
क्रान्तायै स्वाहा

ॐ सर्वमन्त्रायै स्वाहा

ॐ अक्षरालयायै स्वाहा

ॐ अमायै स्वाहा

ॐ अणुरूपायै स्वाहा

ॐ विमलायै स्वाहा

ॐ त्रैगुण्यायै स्वाहा

ॐ अपराजितायै स्वाहा

ॐ अम्बिकायै स्वाहा

ॐ अम्बालिकायै स्वाहा

ॐ अम्बायै स्वाहा

ॐ अनन्तगुणमेखलायै स्वाहा

ॐ अपर्णायै स्वाहा

ॐ पर्णशालायै स्वाहा

ॐ साट्टहासायै स्वाहा

ॐ हसन्तिकायै स्वाहा

ॐ हसन्त्यै स्वाहा

ॐ हस्तिमुखायै स्वाहा

ॐ हस्तिपादायै स्वाहा

ॐ मनोरमायै स्वाहा

ॐ अद्रिकन्यायै स्वाहा

ॐ अट्टहासायै स्वाहा

ॐ अजराऽस्यायै स्वाहा

ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा

ॐ अब्जाक्ष्यै स्वाहा

ॐ अब्जिनीदेव्यै स्वाहा

ॐ अम्बुजासन-

संस्थितायै स्वाहा

ॐ अब्जहस्तायै स्वाहा

ॐ अब्जपादायै स्वाहा

ॐ अब्जपूजन-

तोषितायै स्वाहा

ॐ अकारमातृका-

देव्यै स्वाहा

ॐ सर्वानन्दकर्यै स्वाहा

ॐ कलायै स्वाहा

ॐ आनन्दसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ आर्यायै स्वाहा
ॐ आघूर्णारुण-
लोचनायै स्वाहा
ॐ आदिदेवायै स्वाहा
ॐ अन्तकक्रूरायै स्वाहा
ॐ आदित्यकुल-
भूषणायै स्वाहा
ॐ आंबीजमण्डलादेव्यै स्वाहा
ॐ आकारमातृका-
वलये स्वाहा
ॐ इन्द्रस्तुतायै स्वाहा
ॐ इन्दुबिम्बास्यायै स्वाहा
ॐ इनकोटिसम-
प्रभायै स्वाहा

ॐ इन्दिरायै स्वाहा

ॐ मन्दिरायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ शालायै स्वाहा ४००

ॐ इतिहास,कथायै स्वाहा

ॐ मत्यै स्वाहा

ॐ इलायै स्वाहा

ॐ इक्षुरसदायै स्वाहा

ॐ आस्वादायै स्वाहा

ॐ इकाराक्षर,भूषितायै स्वाहा

ॐ इन्द्रस्तुतायै स्वाहा

ॐ इन्द्र,संपूज्यायै स्वाहा

ॐ इनभद्रायै स्वाहा

ॐ इनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ इभस्थितये स्वाहा

ॐ इभांगीनायै स्वाहा

ॐ इकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

ॐ ईश्वर्यै स्वाहा

ॐ वैभव,ख्यातायै स्वाहा

ॐ ईशान्यै स्वाहा

ॐ ईश्वर,वल्लभायै स्वाहा

ॐ ईशायै स्वाहा

ॐ कामकलायै स्वाहा

ॐ ऐन्द्यै स्वाहा

ॐ ईकाराक्षर–
मातृकायै स्वाहा

ॐ उग्रप्रभायै स्वाहा

ॐ उग्रचिन्तायै स्वाहा

ॐ उग्रवामाङ्गवासिन्यै स्वाहा

ॐ उषायै स्वाहा

ॐ उग्रायै स्वाहा

ॐ वैष्णवपूज्यायै स्वाहा

ॐ उग्रतारायै स्वाहा

ॐ उल्मुकाननायै स्वाहा

ॐ उमेश्वर्यै स्वाहा

ॐ गुणश्रेष्ठायै स्वाहा

ॐ उस्त्रायै स्वाहा

ॐ उदेश्वर्यै स्वाहा

ॐ उदकप्रियायै स्वाहा

ॐ उदकाच्छायै स्वाहा

ॐ उदकदात्र्यै स्वाहा

ॐ उकारोद्भव
मातृकायै स्वाहा

ॐ ऊष्मायै स्वाहा

ॐ ऊषायै स्वाहा

ॐ ऊषणायै स्वाहा

ॐ सीतायै स्वाहा

ॐ दित्यै स्वाहा

ॐ आदित्यसुप्रभायै स्वाहा

ॐ ऋणहर्त्र्यै स्वाहा

ॐ ऋणायै स्वाहा

ॐ ऋणेश्यै स्वाहा

ॐ ऋलृवर्णायै स्वाहा

ॐ लृवर्णभाजे स्वाहा

ॐ ऌकारायै स्वाहा

ॐ भ्रुकुटये स्वाहा

ॐ बालायै स्वाहा

ॐ बालादित्य-

समप्रभायै स्वाहा

ॐ एनाङ्गमुकुटायै स्वाहा

ॐ ईहात्मने स्वाहा

ॐ एकाराक्षर-

बीजितायै स्वाहा

ॐ एनुप्रियायै स्वाहा

ॐ एनाङ्कमध्यस्थितायै स्वाहा

ॐ एनमध्युवासिन्यै स्वाहा

ॐ एनेन्द्रवत्सलायै स्वाहा

ॐ एन्यै स्वाहा

ॐ एकारोद्धा-
समातृकायै स्वाहा
ॐ ओंकारशेखरा-
भासायै स्वाहा
ॐ औचित्यायै स्वाहा
ॐ मदमण्डितायै स्वाहा
ॐ अम्भोजनिलयायै स्वाहा
ॐ स्वस्थायै स्वाहा
ॐ अःस्वरूपायै स्वाहा
ॐ चिदात्मिकायै स्वाहा
ॐ षोडशस्वररूपायै स्वाहा
ॐ षोडशस्वरगायन्यै स्वाहा
ॐ षोडश्यै स्वाहा
ॐ षोडशाकारायै स्वाहा

ॐ कमलायै स्वाहा

ॐ कमलोद्भवायै स्वाहा

ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा

ॐ कलाभिज्ञायै स्वाहा

ॐ कुमार्यै स्वाहा

ॐ कुटिलालकायै स्वाहा

ॐ कुटिलायै स्वाहा

ॐ कुटिलाकारायै स्वाहा

ॐ कुटुम्बिन्यै स्वाहा

ॐ कृत्यै स्वाहा

ॐ शिवायै स्वाहा

ॐ कुलाकुलोपदेशान्यै स्वाहा

ॐ कुलेश्यै स्वाहा

ॐ कुब्जिकायै स्वाहा

ॐ कलायै स्वाहा

ॐ कामायै स्वाहा

ॐ कामप्रियायै स्वाहा

ॐ कीरायै स्वाहा

ॐ कमनीयायै स्वाहा

ॐ कपालिन्यै स्वाहा

ॐ कालिकायै स्वाहा

ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा

ॐ कालायै स्वाहा

ॐ कामान्तकारिण्यै स्वाहा

ॐ कपर्दिन्यै स्वाहा

ॐ कपालेश्यै स्वाहा

ॐ कर्पूरचय-
चर्चितायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ कादम्बर्यै स्वाहा ५००

ॐ कोमलाङ्ग्यै स्वाहा

ॐ काश्मीर्यै स्वाहा

ॐ कुंकुमद्युतये स्वाहा

ॐ कुन्तायै स्वाहा

ॐ कूर्चायै स्वाहा

ॐ आद्यबीजाढ्यायै स्वाहा

ॐ कमनीयायै स्वाहा

ॐ कुलाकुलायै स्वाहा

ॐ करालास्यायै स्वाहा

ॐ करालाक्ष्यै स्वाहा

ॐ कामिन्यै स्वाहा

ॐ काम,पालिन्यै स्वाहा

ॐ कन्था,धरायै स्वाहा

ॐ कृपाकर्त्र्यै स्वाहा

ॐ ककाराक्षर-
मातृकायै स्वाहा

ॐ खड्ग,हस्तायै स्वाहा

ॐ खर्परिश्यै स्वाहा

ॐ खेचर्यै स्वाहा

ॐ खग,गामिन्यै स्वाहा

ॐ खेचरी,मुद्रया-
युक्तायै स्वाहा

ॐ खेचरत्व,प्रदायिन्यै स्वाहा

ॐ खगासनायै स्वाहा

ॐ खलोलाक्ष्यै स्वाहा

ॐ खेटेश्यै स्वाहा

ॐ खलनाशिन्यै स्वाहा

ॐ खेटकायुधहस्तायै स्वाहा

ॐ खरांशुद्युति-
सन्निभायै स्वाहा

ॐ खातायै स्वाहा

ॐ स्वबीजनिलयायै स्वाहा

ॐ खकारोल्लासमातृकायै-
स्वाहा

ॐ वैखर्यै स्वाहा

ॐ बीज निलयायै स्वाहा

ॐ स्वस्थायै स्वाहा

ॐ खेचरवल्लभायै स्वहा

ॐ गुण्यायै स्वाहा

ॐ गजास्य्‌जनन्यै स्वाहा

ॐ गणेश्‌वरदायै स्वाहा

ॐ गयायै स्वाहा

ॐ गोदावर्यै स्वाहा

ॐ गदाहस्तायै स्वाहा

ॐ गदाधर्‌प्रियायै स्वाहा

ॐ गत्यै स्वाहा

ॐ गीतायै स्वाहा

ॐ गोवाह्‌नेशान्यै स्वाहा

ॐ गरलाशन्‌विग्रहायै स्वाहा

ॐ गाम्भीर्य्‌भूषणायै स्वाहा

ॐ गङ्गायै स्वाहा

ॐ गायत्र्यै स्वाहा

ॐ गजवाहनायै स्वाहा

ॐ घोनायै स्वाहा

ॐ घोनाकरस्तुत्यायै स्वाहा

ॐ घुर्घुरायै स्वाहा

ॐ घोरनादिन्यै स्वाहा

ॐ घटस्थायै स्वाहा

ॐ घटजसेव्यायै स्वाहा

ॐ घटपूजनलोलुपायै स्वाहा

ॐ घटामयरसप्रीतायै स्वाहा

ॐ घनरूपायै स्वाहा

ॐ घनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ घनवाहनसेव्यायै स्वाहा

ॐ घकाराक्षर-
मातृकायै स्वाहा

ॐ ङान्तायै स्वाहा

ॐ ङवर्णनिलयायै स्वाहा

ॐ ङानुरूपायै स्वाहा

ॐ ङनालयायै स्वाहा

ॐ ङज्ञानिन्यै स्वाहा

ॐ ङनाजाप्यायै स्वाहा

ॐ ङवर्णाक्षर-
मातृकायै स्वाहा

ॐ चामीकररुचये स्वाहा

ॐ चान्द्र्यै स्वाहा

ॐ चन्द्रकायै स्वाहा

ॐ चन्द्ररागिण्यै स्वाहा

ॐ चलायै स्वाहा

ॐ चेलायै स्वाहा

ॐ चञ्चलायै स्वाहा

ॐ चञ्चरी-

कालकुप्रभायै स्वाहा

ॐ चञ्चरीक

स्वरालापायै स्वाहा

ॐ चमत्कार-

स्वरूपिण्यै स्वाहा

ॐ चटुलायै स्वाहा

ॐ चाटुक्यै स्वाहा

ॐ चार्व्यै स्वाहा

ॐ चम्पायै स्वाहा

ॐ चम्पकसन्निभायै स्वाहा

ॐ चीनांशुकधरायै स्वाहा

ॐ चित्रायै स्वाहा

ॐ चकाराक्षर-
मातृकायै स्वाहा
ॐ छत्र्यै स्वाहा
ॐ छत्रधराच्छन्नायै स्वाहा
ॐ च्छिन्नमस्तायै स्वाहा
ॐ च्छुरच्छवये स्वाहा
ॐ छायासुतप्रियायै स्वाहा
ॐ च्छायायै स्वाहा
ॐ च्छवर्णाम्मल-
मातृकायै स्वाहा
ॐ जगदम्बायै स्वाहा
ॐ जगज्ज्योतिषे स्वाहा
ॐ ज्योतीरूपायै स्वाहा
ॐ जटाधरायै स्वाहा

ॐ जयदायै स्वाहा

ॐ जयकर्त्र्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ जयस्थायै स्वाहा ६००

ॐ जयहासिन्यै स्वाहा

ॐ जयेश्यै स्वाहा

ॐ जयधात्र्यै स्वाहा

ॐ जगत्कर्त्र्यै स्वाहा

ॐ जगत्प्रियायै स्वाहा

ॐ जगत्पूज्यायै स्वाहा

ॐ जगद्वासायै स्वाहा

ॐ जगद्रक्षायै स्वाहा

ॐ जरातुरायै स्वाहा

ॐ ज्वरघ्न्यै स्वाहा

ॐ जम्भदमन्यै स्वाहा

ॐ जगत्प्राणायै स्वाहा

ॐ जयावहायै स्वाहा

ॐ जैत्रायै स्वाहा

ॐ जम्भारिवरदायै स्वाहा

ॐ जीवनायै स्वाहा

ॐ जीववाक्प्रदायै स्वाहा

ॐ जाग्रत्यै स्वाहा

ॐ जगन्निद्रायै स्वाहा

ॐ जगद्योनये स्वाहा

ॐ जलन्धरायै स्वाहा

ॐ जालन्धरजयायै स्वाहा

ॐ जायायै स्वाहा

ॐ जकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ झम्पायै स्वाहा

ॐ झिञ्झेश्वर्यै स्वाहा

ॐ झान्तायै स्वाहा

ॐ झकाराक्षर-

मातृकायै स्वाहा

ॐ ञा-नुरूपायै स्वाहा

ॐ ञिनावासायै स्वाहा

ॐ ञकारेश्यै स्वाहा

ॐ ञणायुधायै स्वाहा

ॐ ञवर्णबीज-

भूषाढ्यायै स्वाहा

ॐ ञकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ टङ्कायुधायै स्वाहा

ॐ टकाराढ्यायै स्वाहा

ॐ टोटाक्ष्यै स्वाहा

ॐ टसुकुन्तलायै स्वाहा

ॐ टङ्काश्रयायै स्वाहा

ॐ टलीरूपायै स्वाहा

ॐ टकाराक्षर-

मातृकायै स्वाहा

ॐ ठक्कुरायै स्वाहा

ॐ ठक्कुरेशान्यै स्वाहा

ॐ ठकारत्रितयेश्वर्यै स्वाहा

ॐ ठःस्वरूपायै स्वाहा

ॐ ठवर्णाढ्यायै स्वाहा

ॐ ठकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ डक्कायै स्वाहा

ॐ डक्केश्वर्यै स्वाहा

ॐ डिम्बायै स्वाहा

ॐ डवर्णाक्षर-

मातृकायै स्वाहा

ॐ ढिण्यै स्वाहा

ॐ ढेयायै स्वाहा

ॐ ढिल्लहस्तायै स्वाहा

ॐ ढकाराक्षर-

मातृकायै स्वाहा

ॐ णेशायै स्वाहा

ॐ णान्तायै स्वाहा

ॐ णवर्णात्मने स्वाहा

ॐ णवर्णाक्षरभूषणायै स्वाहा

ॐ तुर्यै स्वाहा

ॐ तुर्यायै स्वाहा

ॐ तुलारूपायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरायै स्वाहा

ॐ तामसप्रियायै स्वाहा

ॐ तोतुलायै स्वाहा

ॐ तारिण्यै स्वाहा

ॐ तारासप्तविंशति
रूपिण्यै स्वाहा

ॐ त्रिसुरायै स्वाहा

ॐ त्रिगुणिध्येयायै स्वाहा

ॐ त्र्यम्बकेश्यै स्वाहा

ॐ त्रिलोकधृते स्वाहा

ॐ त्रिवर्गेशायै स्वाहा

ॐ त्रय्यै स्वाहा

ॐ त्र्यक्षायै स्वाहा

ॐ त्रिपदायै स्वाहा

ॐ त्रेतरूपिण्यै स्वाहा

ॐ त्रिलोकजनन्यै स्वाहा

ॐ त्रेतायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरेश्वर,पूजितायै स्वाहा

ॐ त्रिकोण,स्थायै स्वाहा

ॐ त्रिकोणेश्यै स्वाहा

ॐ त्रिकोणान्त
निर्वासिन्यै स्वाहा

ॐ त्रिकोण,पूजन-
तुष्टायै स्वाहा

ॐ त्रिकोणपूजन-
प्रियायै स्वाहा

ॐ वसुकोणस्थितायै स्वाहा

ॐ वश्यायै स्वाहा

ॐ वसुकोणार्थवादिन्यै स्वाहा

ॐ वसुकोणा
सनेसंस्थायै स्वाहा

ॐ षट्चक्रक्रमपूजितायै स्वाहा

ॐ नागपत्रस्थितायै स्वाहा

ॐ शार्यै स्वाहा

ॐ त्रिवृत्तपूजनार्थदायै स्वाहा

ॐ चतुर्द्वाराग्रगायै स्वाहा

ॐ चक्रबाह्यान्तर
निवासिन्यै स्वाहा

ॐ तामस्यै स्वाहा

ॐ तुम्बुरुस्तुत्यायै स्वाहा

ॐ तोमरायुधमण्डितायै स्वाहा

ॐ तुलाकोटिस्वनायै स्वाहा

ॐ ताप्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ तपसः–
फलदायिन्यै स्वाहा ७००

ॐ तर्यै स्वाहा

ॐ तरणिरूपायै स्वाहा

ॐ तारकासुरघातिन्यै स्वाहा

ॐ तरलाक्ष्यै स्वाहा

ॐ तमोहर्त्र्यै स्वाहा

ॐ तकाराक्षरमातृ–
कायै स्वाहा

ॐ स्थल्यै स्वाहा

ॐ स्थविररूपायै स्वाहा

ॐ स्थूलायै स्वाहा

ॐ स्थाल्यै स्वाहा

ॐ स्थलाब्जिन्यै स्वाहा

ॐ स्थविरेश्यै स्वाहा

ॐ स्थूलमुख्यै स्वाहा

ॐ थकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ दूतिकायै स्वाहा

ॐ शिवदूत्यै स्वाहा

ॐ दण्डायुधधरायै स्वाहा

ॐ द्युतये स्वाहा

ॐ दीपायै स्वाहा

ॐ दीनानुकम्पायै स्वाहा

ॐ दम्भोलिधर-
वल्लभायै स्वाहा

ॐ देशानुचारिण्यै स्वाहा

ॐ द्रेक्कायै स्वाहा

ॐ द्राविडेश्यै स्वाहा

ॐ दवीयस्यै स्वाहा

ॐ दाक्षायण्यै स्वाहा

ॐ द्रुमलतायै स्वाहा

ॐ देवमात्रे स्वाहा

ॐ आदिदेवतायै स्वाहा

ॐ दधिजायै स्वाहा

ॐ दुर्लभादेव्यै स्वाहा

ॐ देवतायै स्वाहा

ॐ परमाक्षरायै स्वाहा

ॐ दामोदरसुपूज्यायै स्वाहा

ॐ दामोदरवरप्रदायै स्वाहा

ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा

ॐ दण्डिपूज्यायै स्वाहा

ॐ दकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ धर्म्यायै स्वाहा

ॐ धर्ममूर्धन्यायै स्वाहा

ॐ धनदायै स्वाहा

ॐ धनवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ धृतये स्वाहा

ॐ धूर्तायै स्वाहा

ॐ धन्यवध्वै स्वाहा

ॐ धकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ नलिन्यै स्वाहा

ॐ नलिनहस्तायै स्वाहा

ॐ नाराचायुधधरिण्यै स्वाहा

ॐ नीपोपवन-

मध्यस्थायै स्वाहा

ॐ नगरेश्यै स्वाहा

ॐ नरोत्तमायै स्वाहा

ॐ नरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ नृपाराध्यायै स्वाहा

ॐ नृपपूज्यायै स्वाहा

ॐ नृपार्थदायै स्वाहा

ॐ नृपसेव्यायै स्वाहा

ॐ नृपवन्द्यायै स्वाहा

ॐ नरनारायणप्रस्वै स्वाहा

ॐ नर्तक्यै स्वाहा

ॐ नीरजाक्ष्यै स्वाहा

ॐ नवर्णाक्षरभूषणायै स्वाहा

ॐ पद्मेश्वर्यै स्वाहा

ॐ पद्ममुख्यै स्वाहा

ॐ पत्रियानायै स्वाहा

ॐ परापरायै स्वाहा

ॐ पारावतसुतायै स्वाहा

ॐ पेयायै स्वाहा

ॐ परवर्गविमर्दिन्यै स्वाहा

ॐ त्रिपुरारिवध्वै स्वाहा

ॐ पम्पायै स्वाहा

ॐ पत्र्यै स्वाहा

ॐ पत्रीशवाहनायै स्वाहा

ॐ पीवरांसायै स्वाहा

ॐ पतिप्राणायै स्वाहा

ॐ पीतलाक्ष्यै स्वाहा

ॐ पतिप्रियायै स्वाहा

ॐ पाठायै स्वाहा

ॐ पीठस्थितायै स्वाहा

ॐ पीतवस्त्रालङ्कार-
भूषणायै स्वाहा

ॐ पुरूरवस्तुतायै स्वाहा

ॐ पात्र्यै स्वाहा

ॐ पुत्रिकायै स्वाहा

ॐ पुत्रदायै स्वाहा

ॐ प्रजायै स्वाहा

ॐ पुष्पोत्तमायै स्वाहा

ॐ पुष्पवत्यै स्वाहा

ॐ पुष्पमाला-
विभूषितायै स्वाहा
ॐ पुष्पमाला-
धिशोभाढ्यायै स्वाहा
ॐ पकाराक्षर-
मातृकायै स्वाहा
ॐ फलदायै स्वाहा
ॐ स्फीतवस्त्रायै स्वाहा
ॐ फेरुराव-
विभूषणायै स्वाहा
ॐ फल्गुन्यै स्वाहा
ॐ फल्गुतीर्थस्थायै स्वाहा
ॐ फवर्गकृत-
मण्डनायै स्वाहा

ॐ बलदायै स्वाहा

ॐ बाल्खिल्यायै स्वाहा

ॐ बालायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ बलरिपुप्रियायै स्वाहा८००

ॐ बाल्यावस्थायै स्वाहा

ॐ बन्धरेश्यै स्वाहा

ॐ बकाराकृति-
मातृकायै स्वाहा

ॐ भद्रिकायै स्वाहा

ॐ भीमपत्न्यै स्वाहा

ॐ भमायै स्वाहा

ॐ भर्गशिखायै स्वाहा

ॐ अभयायै स्वाहा

ॐ भयघ्न्यै स्वाहा

ॐ भीमनादायै स्वाहा

ॐ भयानक-

मुखेक्षणायै स्वाहा

ॐ भिल्लीश्वर्यै स्वाहा

ॐ भीतिहरायै स्वाहा

ॐ भद्रदायै स्वाहा

ॐ भाग्यवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ भगमालायै स्वाहा

ॐ भगावासायै स्वाहा

ॐ भवान्यै स्वाहा

ॐ भवतारिण्यै स्वाहा

ॐ भगयोनये स्वाहा

ॐ भगाकारायै स्वाहा

ॐ भगस्थायै स्वाहा

ॐ भगरूपिण्यै स्वाहा

ॐ भगलिङ्गा-
मृतप्रीतायै स्वाहा

ॐ भकाराक्षर-
मातृकायै स्वाहा

ॐ मान्यायै स्वाहा

ॐ मानप्रदायै स्वाहा

ॐ मीनायै स्वाहा

ॐ मीनकेतन-
लालसायै स्वाहा

ॐ मदोद्धतायै स्वाहा

ॐ मनोतीतायै स्वाहा

ॐ मेनायै स्वाहा

ॐ मैनाकवत्सलायै स्वाहा

ॐ मांसाहारायै स्वाहा

ॐ मांसप्रीतायै स्वाहा

ॐ मत्स्यघातायै स्वाहा

ॐ महत्तरायै स्वाहा

ॐ मेरुश्रृङ्गाग्रतुङ्गस्थायै स्वाहा

ॐ मोदकाहारपूजितायै स्वाहा

ॐ मातङ्गिन्यै स्वाहा

ॐ मदोन्मत्तायै स्वाहा

ॐ मधुमत्तायै स्वाहा

ॐ मठेश्वर्यै स्वाहा

ॐ मज्जायै स्वाहा

ॐ मुग्धाननायै स्वाहा

ॐ मुग्धायै स्वाहा

ॐ मकाराक्षर-
भूषणायै स्वाहा

ॐ यशस्विन्यै स्वाहा

ॐ यतीशान्यै स्वाहा

ॐ यत्क्रत्र्यै स्वाहा

ॐ यजुःप्रियायै स्वाहा

ॐ यज्ञदात्र्यै स्वाहा

ॐ यज्ञफलायै स्वाहा

ॐ यजुर्वेदफलायै स्वाहा

ॐ यतये स्वाहा

ॐ यशोदायै स्वाहा

ॐ यतिसेव्यायै स्वाहा

ॐ यात्रायै स्वाहा

ॐ यात्रिकवत्सलायै स्वाहा

ॐ योगीश्वर्यै स्वाहा

ॐ योगगम्यायै स्वाहा

ॐ योगीन्द्रजन-

वत्सलायै स्वाहा

ॐ यदुपुत्र्यै स्वाहा

ॐ यमघ्न्यै स्वाहा

ॐ यकाराक्षर-

मातृकायै स्वाहा

ॐ रत्नेश्वर्यै स्वाहा

ॐ रमानाथसेव्यायै स्वाहा

ॐ रथ्यायै स्वाहा

ॐ रजस्वलायै स्वाहा

ॐ राज्यदायै स्वाहा

ॐ राजराजेश्यै स्वाहा

ॐ रोगहर्त्र्यै स्वाहा

ॐ रजोवत्यै स्वाहा

ॐ रत्नाकर,सुतायै स्वाहा

ॐ रम्यायै स्वाहा

ॐ रात्र्यै स्वाहा

ॐ रात्रीपति,प्रभायै स्वाहा

ॐ रक्षोघ्न्यै स्वाहा

ॐ राक्षसेशान्यै स्वाहा

ॐ रक्षोनाथ-

समर्चितायै स्वाहा

ॐ रतिप्रियायै स्वाहा

ॐ रतिसुखायै स्वाहा

ॐ रकारकृतशेखरायै स्वाहा

ॐ लम्बोदर्यै स्वाहा

ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा

ॐ लास्यतत्परमानसायै स्वाहा

ॐ लूतातन्तु-
वितानास्यायै स्वाहा

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ लज्जालयायै स्वाहा

ॐ अलिन्यै स्वाहा

ॐ लोकेश्वर्यै स्वाहा

ॐ लोकदात्र्यै स्वाहा

ॐ लाटस्थायै स्वाहा

ॐ लक्ष्मणाकृतये स्वाहा

ॐ लम्बायै स्वाहा

ॐ लम्बकुचोल्लासायै स्वाहा

ॐ लकाराक्षरवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ लिङ्गप्रीतायै स्वाहा

ॐ कलिङ्गेश्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ लिङ्गस्थायै
स्वाहा१००

ॐ लिङ्गलिङ्गिन्यै स्वाहा

ॐ लक्ष्मीरूपायै स्वाहा

ॐ रसोल्लासायै स्वाहा

ॐ रामायै स्वाहा

ॐ रेवायै स्वाहा

ॐ रजोवत्यै स्वाहा

ॐ लयदात्र्यै स्वाहा

ॐ लक्ष्मणायै स्वाहा

ॐ लोलायै स्वाहा

ॐ लकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ वाराह्यै स्वाहा

ॐ वरदात्र्यै स्वाहा

ॐ वीरस्वै स्वाहा

ॐ वरदायिन्यै स्वाहा

ॐ वीरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ वीरजन्यायै स्वाहा

ॐ वरचर्वणचर्चितायै स्वाहा

ॐ वरायुधायै स्वाहा

ॐ वराकायै स्वाहा

ॐ वामनायै स्वाहा

ॐ वामनाकृतये स्वाहा

ॐ वधूतायै स्वाहा

ॐ वधकावध्यायै स्वाहा

ॐ वध्यभुवे स्वाहा

ॐ वणिजप्रियायै स्वाहा

ॐ वसन्तलक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ वटुक्यै स्वाहा

ॐ वटुकायै स्वाहा

ॐ वटुकेश्वर्यै स्वाहा

ॐ वटुप्रियायै स्वाहा

ॐ वामनेत्रायै स्वाहा

ॐ वामाचारैक-

लालसायै स्वाहा

ॐ वात्यायै स्वाहा

ॐ वाम्यायै स्वाहा

ॐ वरारोहायै स्वाहा

ॐ वेदमात्रे स्वाहा

ॐ वसुन्धरायै स्वाहा

ॐ वयोयानायै स्वाहा

ॐ वयस्यायै स्वाहा

ॐ वकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

ॐ शम्भुप्रियायै स्वाहा

ॐ शरच्चर्यायै स्वाहा

ॐ शाद्वलायै स्वाहा

ॐ शशिवत्सलायै स्वाहा

ॐ शीतद्युतये स्वाहा

ॐ शीतरसायै स्वाहा

ॐ शोणोष्ठ्यै स्वाहा

ॐ शीकरप्रभायै स्वाहा

ॐ श्रीवत्सलाञ्छनायै स्वाहा

ॐ शर्वायै स्वाहा

ॐ शर्व-
वामाङ्गवासिन्यै स्वाहा

ॐ शशाङ्कामल-
शोभाढ्यायै स्वाहा

ॐ शार्दूलतनवे स्वाहा

ॐ अद्रिजायै स्वाहा

ॐ शेषहर्त्र्यै स्वाहा

ॐ शमीमूलायै स्वाहा

ॐ शकारकृत-
शेखरायै स्वाहा

ॐ षोडशाक्षर,मन्त्रेश्यै स्वाहा

ॐ षाढायै स्वाहा

ॐ षोडायै स्वाहा

ॐ षडाननायै स्वाहा

ॐ षट्कूटायै स्वाहा

ॐ षड्रसा,स्वादायै स्वाहा

ॐ षडशीति-

मुखाम्बुजायै स्वाहा

ॐ षडास्य,जनन्यै स्वाहा

ॐ षण्ठायै स्वाहा

ॐ षवर्णा,क्षर,मातृकायै स्वाहा

ॐ सरस्वती,प्रस्वै स्वाहा

ॐ सर्वायै स्वाहा

ॐ सर्वगायै स्वाहा

ॐ सर्वतोमुखायै स्वाहा

ॐ समायै स्वाहा

ॐ सीमायै स्वाहा

ॐ सतीमात्रे स्वाहा

ॐ सागराभयदायिन्यै स्वाहा

ॐ समस्तपापशमन्यै स्वाहा

ॐ सालभञ्ज्यै स्वाहा

ॐ सुदक्षिणायै स्वाहा

ॐ सुषुप्त्यै स्वाहा

ॐ सरसायै स्वाहा

ॐ साध्व्यै स्वाहा

ॐ सामगायै स्वाहा

ॐ सामवेदजायै स्वाहा

ॐ सत्यप्रियायै स्वाहा

ॐ सोममुख्यै स्वाहा

ॐ सूत्रस्थायै स्वाहा

ॐ सूतवल्लभायै स्वाहा

ॐ सनकेश्यै स्वाहा

ॐ सुनन्दायै स्वाहा

ॐ सवर्णायै स्वाहा

ॐ स्वास्थ्यदायिन्यै स्वाहा

ॐ हाहाहूहूस्वरूपायै स्वाहा

ॐ हलदात्र्यै स्वाहा

ॐ हलिप्रियायै स्वाहा

ॐ हंक्षः स्वरूपानुगतायै स्वाहा

ॐ सर्वमातृकपूजितायै स्वाहा

ॐ हरिदीश्वरपूज्यात्मने स्वाहा

ॐ हविष्याहुतिवल्लभायै स्वाहा

ॐ ऐंसौःह्रींमहाविद्यायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ आंशांह्रांहूं
स्वरूपिण्यै स्वाहा१०००

विजयेश्वर-ज्योतिष कार्यालय से छपी
पुस्तकें मिलने के पते :-

1. विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार
तालाब तिलो जम्मू

2. जे. के. बुक शाप
तालाब तिलो जम्मू

3. भसीन स्टेशनरी स्टोर
पक्का-ढंगा जम्मू

4. यूनिवर्सल निवज़ एज़न्सी
उधमपुर - जम्मू

5. देहली में
तनेजा एलकट्रिक्लज़ एण्ड टय्न्ट हाऊस
रघुनाथ बाजार अमरकालोनी
लाजपतनगर-देहली - 6429046
शाप नं. 45 ब्रह्मपुत्र शापिंग कम्पलेक्स
सैक्टर - 29 नयोडा - देहली

गणेशसहस्त्रनामावली